संपादकीय

प्रिय पाठको! अप्रैल माह हमने एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य के "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा को समावेशी रूप से विश्व महिला दिवस, विश्व जल दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व धरोहर दिवस, विश्व पृथ्वी दिवस, विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस आदि पर चिंतन-मनन कर बढ़ावा देते हुए मनाया। इन दिवसों को उत्साहपूर्वक मनाने का उद्देश्य वैश्विक एकता की भावना को बढ़ावा देना है, जो हमें एक होने और मिलकर विकास करने के लिए प्रेरित करती है। नव ज्ञान सृजन, तकनीकी विकास के साथ-साथ मनुष्य की स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है जो व्यक्ति एवं समाज, दोनों के विकास के लिए आवश्यक है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक भी इन्हीं सरोकारों से जुड़े कुछ लेख व शोध-पत्रों को प्रस्तुत करता है।

शिक्षा समाज की उन्नति का आधार है। अत: विद्यालयों में विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा में, विशेषकर बुनियादी स्तर पर गुणवत्तापरक आवश्यक सुधार होने ज़रूरी हैं। इसी पर आधारित लेख, 'बुनियादी स्तर की शिक्षा के उभरते आयाम' के अंतर्गत *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* तथा *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के आलोक में बुनियादी स्तर की शिक्षा के नवीन आयामों पर चर्चा की गई है। साथ ही, इसमें बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास हेतु किए गए प्रयासों के साथ सुझावों को भी प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों के अधिगम को सरल एवं सुगम बनाने में सहायक हो।

सामाजिक समानता के लिए शिक्षा को सार्थक रूप से प्रभावी बनाने हेतु उसमें बदलाव होना आवश्यक है। इसी बदलाव को तर्कसंगत रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित किया गया है। इसी पर आधारित लेख, 'मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विश्लेषण' में मदन मोहन मालवीय के शिक्षा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

स्वस्थ मनुष्य अपनी सभी गतिविधियाँ एवं कार्य भली-भाँति कर सकता है। इसलिए विद्यार्थियों का स्वस्थ होना अतिआवश्यक है। इसी पर आधारित लेख 'विद्यार्थियों के समग्र विकास का आधार— मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा' इस अंक में शामिल किया गया है। इस लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु दी गई अनुशंसाओं एवं इसके लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के साथ मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के उपायों एवं क्रियाकलापों को प्रस्तुत किया गया है।

आज औद्योगिकीरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण तथा भौतिक सुविधाओं के कारण बदलती सामाजिक व आर्थिक स्थिति आदि कारणों से व्यक्ति के विचारों और जीवनशैली में तेज़ी से बदलाव आ रहे हैं। इन बदलावों को उनके स्वास्थ्य पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इन्हीं प्रभावों का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों की जीवनशैली का मापन करने के लिए जीवनशैली मापनी का निर्माण किया गया, जिसे 'जीवनशैली

मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण' नामक शोध-पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान युग में सोशल मीडिया की विशेष भूमिका है, जिसने विशेषकर विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम को बहुत प्रभावित किया है। 'सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव' नामक शोध-पत्र में यह दर्शाया गया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से अधिकतर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, इसमें यह भी बताया गया है कि कुछ विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सही जानकारी न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है।

विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन का उपयोग करने का शौक प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस कारण स्मार्टफ़ोन उनके लिए एक व्यसन या लत बन गया है। इसी समस्या को शोध-पत्र 'विद्यार्थियों में स्मार्टफोन की लत का अध्ययन' में प्रस्तुत किया गया है। शोध-पत्र यह भी बताया गया है कि स्मार्टफ़ोन का अत्यधिक उपयोग करने से विद्यार्थियों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रयासों पर ज़ोर दिया गया है।

भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है। इसलिए शिक्षा में बहुसंस्कृति को बढ़ावा देते हुए विद्यालयों में शिक्षा का समावेशी और अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा। इसी को शोध-पत्र 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति' में प्रस्तुत किया गया है।

एक विद्यार्थी को अधिगम-शिक्षण के दौरान अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें विशेष रूप से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सम्मुख कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और उनका शैक्षिक निष्पादन प्रभावित होता है। इन समस्याओं को शोध-पत्र 'दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता— एक अनुभवात्मक अध्ययन' में उजागर किया गया है।

कक्षा में विद्यार्थियों को अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं। इन विषयों में विज्ञान को एक कठिन विषय माना जाता है, जिसमें प्रयोग करना अनिवार्य रूप से शामिल है। अतः इस विषय को रोचक ढंग से पढ़ाने का प्रयास करना आवश्यक है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता' प्रस्तुत किया गया है, जिसमें विज्ञान विषय को अधिक सरलता से समझने के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा सहयोग-अधिगम विधि के उपयोग एवं प्रभाव को दर्शाया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से शिक्षा में अनेक परिवर्तन हुए हैं। इसी पर आधारित पुस्तक समीक्षा 'शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)' में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए निर्मित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को चार भागों में विस्तारपूर्वक विश्लेषण कर प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध-पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु कवर 3 पर दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति